स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी-मराठी कविता

संपादक :
प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
सह संपादक :
प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

अनुक्रमणिका

1.	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी–मराठी कविता –प्रो. डॉ. गोपाळ शंकरराव भोसले	11
2.	राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना से आतप्रोत स्वाधीनता कालीन हिंदी-मराठी काव्य - प्रो. महेबूब मंगरूले	14
3.	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता - प्रो. कैप्टन शिंदे अनिता मधुकरराव	20
4.	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता - डॉ. नितिन माने	24
5.	स्वाधीनता आंदोलन और उर्दू शायरी - प्रा. डॉ. जयराम श्री सूर्यवंशी	29
6.	हिंदी कविता और भारतीय स्वाधीनता आंदोलन - डॉ. संजय नाईनवाड	33
7.	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता की प्रासंगिकता -प्रा. डॉ. महावीर उदगीरकर	40

4

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता

डॉ.नितिन माने

साहित्य राष्ट्र निर्माण का आधार है | कोई भी युग, कालखंड हो तत्कालीन समय में साहित्य ने समाज का, देश का पथ प्रदर्शन किया है | वास्तव में साहित्य और समाज का अतुट नाता है | दोनों एक - दूसरे के पूरक होते हैं | साहित्य समाज की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, संस्कृति गतिविधियों से प्रभावित होता है, और समाज को भी प्रभावित करता है | भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिस पर कई बार विदेशियों द्वारा आक्रमण हुआ हैं |

सन 1757 मे अंग्रेजों ने प्लासी का युद्ध जीत कर बंगाल से अपने साम्राज्य की शुरुआत की थी | सन 1857 अर्थात लगभग सौ वर्षों में उन्होंने पूरे भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया | दोनों आक्रमणकारी विदेशी थे, लेकिन इनके उद्देश्य भी अलग-अलग थे | मुस्लिम शासको का उद्देश धार्मिक एवं राजनीतिक था | जबकि अंग्रेजों का उद्देश्य व्यापारी था | अर्थात उन्होंने व्यापार के लिए राज्य स्थापित किया था |

अंग्रेजों ने व्यापार के द्वारा भारत देश का शोषण इतना किया कि जिस देश में सोने की चिड़िया बसेरा करती थी, जहां सोने का धुआ निकलता था वह देश कंगाल होने की कगार पर आ खड़ा हुआ था | अंग्रेजों के आने से देश की राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक नीतियों में बदलाव आने लगा था | पूरे विश्व में अंग्रेज प्रगत थे | उन्होंने भारत में अपने स्वार्थ के लिए - रेल, व्यापार, डाक, ज्ञान विज्ञान, शिक्षा, औद्योगिकरण आदि का अविष्कार किया था | साथ ही वे लोकशाही मूल्यों को मानने वाले थे | ऐसे प्रगत लोगों से अप्रगत पिछड़े हुए भारतीयों का पाला पड़ा था "उनकि नीतियों से असंतुष्ट देशी राजाओं ने एकजुट होकर 1857 ई में व्यापक स्तर पर विद्रोह किया | फलस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी समाप्त कर दी गई और भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया | अंग्रेजों ने अपनी आर्थिक, प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन किया | देश के लोग भी नए संदर्भ में कुछ नया सोचने और करने के लिए बाध्य हुए | साहित्य मनुष्य के ब्रहतर सुख - दुख के साथ पहली बार जुड़ा | यह प्रक्रिया भारतेंदु के समय में हुई."[1]

अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा की व्यवस्था, मुद्रण व्यवस्था का अविष्कार किया | जिससे भारतीय बुद्धिजीवियों को अपने देश का शोषण तथा उसका कारण समझने लगा

| अब भारतियों में आत्म शोधन की प्रक्रिया शुरू हो गई | एक ओर ओसमाज सुधारकों ने आर्य समाज, प्रार्थना समाज आदि के माध्यम से समाज की अस्मिता को जागृत करने का प्रयास किया तो दूसरी ओर साहित्यकारों ने -भारतेंदु हरिश्चंद्र, राधाचरण गोस्वामी, मैथिलीशरण गुप्त, बद्रीनारायण चौधरी, रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे अनेक हिंदी साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों, कहानियों, नाटक तथा कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित किया |

आधुनिक हिंदी साहित्य के जन्मदाता तथा भारतीय नवजागरण के प्रतीक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने विविध विधाओं का सृजन किया | तथा उसे व्यापक रूप भी दिया | उनके साहित्य सर्जन का आत्मा भारतीय समाज, देश प्रेम, तथा लोक हित था | भारतेंदु का साहित्य राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर तत्कालीन युग का यथार्थ चित्रण करता है | भारतेंदु जी ने कविता, मुकरी, नाटक आदि विधाओं के माध्यम से देश प्रेम, देश हित की भावना को अभिव्यक्त किया है | उनकी मुकरी में अंग्रेज किस प्रकार से शोषण करते हैं इसका व्यंग्यात्मक चित्रण किया है | जैसे

"भीतर -भीतर सब रस चुसै |
हंसी हंसी कै तन मन धन मुसै ||
जाहिर बातन में अति तेज |
क्यों सखी सज्जन, नहीं अंग्रेज" [2]

भारतेंदु जी ने अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे अन्याय अत्याचार का भी अपनी मुकरी में पर्दा फास किया है | अंग्रेज भारतीय लोगों को वह भी उन लोगों को खिताब का लालच देते थे जो उनकी चापलूसी करते थे | ताकि चापलूस लोगों के माध्यम से भारतीय समाज का शोषण कर सके | भारतेंदु ने इन बातों का व्यंग्यात्मक रूप में बहुत ही सुंदर चित्रण किया है |

"इनकी उनकी खिदमत करो |
रुपया देते देते मरो ||
तब आवै मोहि करत खराब |
क्यों सखि सज्जन नहीं खिताब ||" [3]

इसी प्रकार भारतेंदु की 'विजयनि विजय वैजयंती', राधाचरण गोस्वामी की 'हमारो उत्तम भारत देश', प्रेमघन की 'महापर्व' और 'नया संवत', राधा कृष्ण दास की 'भारत बारहमासा' और 'विनय' आदि कविताएं देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है | "भारतेंदु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली प्रश्नों की तो अनेक बार दिलाई पर

उनके राष्ट्रीय भावना केवल यही तक सीमित नहीं रही... क्षेत्रीयता से उपर उठ कर वे संपूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे"[4]

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग की एक ऐसी महान हस्ती है जिनके काव्य में, रग रग में देश प्रेम, राष्ट्रहित की भावना कूट - कूट कर भरी है | इसी कारण उन्हें सन 1936 में महात्मा गांधी जी ने 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया | उनके 'भारत भारती' रचना में भारत के अतीत गौरव के साथ साथ वर्तमान दुर्दशा की ओर ध्यान आकृष्ट किया है | परतंत्रता की बेड़ियां तोड़ने का आवाहन किया | इसी कारण तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने 'भारत भारती' इस कृति को जब्त कर लिया था |

"जिसको न निज गौरव, देश पर अभिमान है |
मनुष्य नहीं वह पशु नीरा और मृतक समान हैं ||"[4]

इसी प्रकार गुप्ता जी ने 'स्वदेश संगीत' 'गुरुकुल' आदि रचनाएं लिखी | इस काल में गया प्रसाद शुक्ला, नाथूराम शर्मा शंकर, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने स स्वाधीनता संग्राम के लिए नवयुवकों को प्रेरित करने वाली कविताये लिखी | चतुर्वेदी जी की 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में एक फूल के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, देश के लिए मर मिटने की भावना को उजागर किया है |

"मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेक |
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जावे वीर अनेक ||"[5]

छायावादी काल में स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करने वाली कविताओं का स्वर और तेज होता गया | प्रसाद, निराला, नवीन आदि ने स्वाधीनता आंदोलन को लेकर काव्य रचनाएं की | प्रसाद जी ने भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के गौरवशाली अतीत के माध्यम से जनमानस में नई चेतना का संस्कार किया | उन्होंने 'शेर सिंह का आत्मसमर्पण' 'पेशोला की प्रतिध्वनि' 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' आदि कविताओं का सृजन किया |

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती |
स्वयं प्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती...
प्रवीर हो जय बनो - बढ़े चलो ,बढ़े चलो!"[6]

प्रसाद की तरह निराला जी ने भी राष्ट्रीय भावना की कविताएं लिखी | वे ओज और उदात्त के कवि है | भारत की परतंत्रता के प्रति वे जनता को जागरूक करना अपना परम कर्तव्य मानते हैं | उनकी रचनाएं राष्ट्रीय चेतना से कूट-कूट कर भरी हुई है | 'जागो

फिर एक बार' कविता के माध्यम से वे भारतीय वीरों को अंग्रेजी गीध्दो का सफाया करने का आह्वान करते हैं।

"शेरों की मांद में आया है आज स्यार।
जागो फिर एक बार।
तुम हो महान तुम सदा ही महान
है नश्वर यह दीन भाव...
जागो फिर एक बार॥"[7]

इसी प्रकार उन्होंने 'भारती जय विजय करे', 'मातृ वंदना', 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' कविताएं लिखी। डॉ.भागीरथ मिश्र एक जगह लिखते हैं "निराला की अधिकांश कविताओं की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीयता का रंग विद्यमान मिलेगा।"[8]

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारत वासियों को स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा देश की आंतरिक विसंगतियों को एवं विषमताओं को दूर करने का आवाहन किया है उन्होंने कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ कविता के माध्यम से वे भारतीय समाज में क्रांति लाना चाहती है जिससे अंग्रेजों का राज उथल पुथल हो जाए

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए॥"[9]

नवीन जी की तरह स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरित होकर सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी कई कविताओं का सृजन किया है। उनके 'त्रीधारा' 'मुकुल' कविता संग्रह देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत है। उनकी कविता 'झांसी की रानी' तो बहुत ही लोकप्रिय है। इसी प्रकार रामधारी सिंह दिनकर, रामनरेश त्रिपाठी, सियारामशरण गुप्त आदि कई कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारत का अतीत गौरव करके वर्तमान स्थिति से, अर्थात अंग्रेजों द्वारा हो रहे शोषण से अवगत करके, उन्हें देश से निकालने तथा स्वाधीनता आंदोलन में कूद पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाली कविताओं का सृजन किया। वास्तव में हिंदी साहित्य- कविताओं ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए ऐसी पृष्ठभूमि तैयार की। जिससे सभी भारतीय प्रेरित होकर स्वाधीनता प्राप्त करने में सफल हुए।

संदर्भ सुची :

1.' हिंदी साहित्य का इतिहास' डॉ नगेंद्र,डॉ हरदयाल, पृ.सं. 401
2. 'साहित्य भारती' मु सं डॉ.अजय टेंगसे, पृ.सं. 15
3. 'साहित्य भारती' मु सं डॉ.अजय टेगसे, पृ.सं. 16
4. 'हिंदी साहित्य का इतिहास' - डॉ.नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, पृ.सं. 440

5. 'श्रेष्ठ कविताएं' संपा अनुप पांडे, पृ.सं. 40
6. 'श्रेष्ठ कविताएं' संपा अनूप पांडे पृ.सं. 65
7. 'समृद्ध काव्य' मु संपा. डॉ.संजय गड़पायले, पृ.स. 63
8. 'निराला की श्रेष्ठ रचनाएं', संपा. वाचस्पति पाठक, पृ.सं. 102
9. 'द्विवेदी युगीन कविता', संपा. हरिओम मीना पृ.सं. 51.

सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर जि.जालना,
E-mail : niteenmane1@gmail.com
दु. भा. 9970 35 25 83

•